Dr.Raman Kumar Thakur

Assistant professor (Guest) Department of Economics,D.B.College Jaynagar, Madhubani.

Class: -B.A.part -1 (H.)

Date:- 14-10-2020.Lecture n.-14.

TOPIC:- उपभोक्ता का अतिरेक

(CONSUMAR'S SURPLUS)

→ उपभोक्ता का अतिरेक :- सामान्य रूप में किसी वस्तु के प्रयोग से मिलने वाली संतुष्टि, उसके प्रयोग मूल्य की घोतक होती है और उसी वस्तु की बाजार में प्रचलित कीमत उसके विनिमय मूल्य को प्रदर्शित करती हैं।

उपभोक्ता के अतिरेक की अवधारणा का प्रतिपादन सर्वप्रथम फ्रांसीसी अर्थशास्त्री ए. जे.डयूपिट द्वारा 1844 में किया गया था। उपभोक्ता के अतिरेक की संकल्पना का सारांश यह है कि किसी वस्तु को क्रय करने से उपभोक्ता को जो संतुष्टि प्राप्त होती है, उसकी तुलना में उस वस्तु को क्रय करने में कम संतुष्टि का त्याग करना पड़ता है. इसलिए किसी वस्तु को क्रय करने पर उपभोक्ता को अतिरेक की प्राप्ति का अनुभव होता है। वास्तव में यह अतिरेक उस अतिरिक्त संतुष्टि का ही घोतक होता है जो उसे उपभोक्ता

कि किसी वस्तु को क्रय करने से प्राप्त होती है। वास्तव में कभी-कभी हम किसी वस्तु के लिए जितनी कीमत देने को तैयार रहते हैं उसे कम कीमत पर वह वस्तु हमें प्राप्त हो जाती है इस परिस्थिति में हमें कुछ अतिरेक या बचत का अनुभव होता है ।

दूसरे, शब्दों में यह कहा जा सकता है कि" किसी वस्तु के उपभोग से वंचित रह जाने की अपेक्षा उपभोक्ता वस्तु के लिए जो अधिकतम कीमत देने को तैयार रहता है और वास्तव में वह जिस कीमत का भुगतान करता है इन दोनों कीमतों का अंतर उपभोक्ता का अतिरेक है।," संक्षेप में, हम यह कह सकते हैं कि किसी वस्तु के लिए उपभोक्ता जो कीमत देने को तैयार होता है और जो कीमत वह वास्तव में देता है दोनों का अंतर ही उपभोक्ता का अतिरेक है।

मान्यताये(Assumptions) :- उपभोक्ता अतिरेक की मान्यताएं इस प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है:-

1) प्रोफेसर मार्शल का मानना है कि मुद्रा की सीमांत उपयोगिता स्थिर रहती है अर्थात उस पर सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम लागू नहीं होता है।

2) इस संकल्पना की सर्वाधिक महत्वपूर्ण मान्यता यह है कि इसमें उपयोगिता को मापनीय माना गया है तथा उसे मापने के लिए मुद्रा- रूपी पैमाने का प्रयोग किया गया है।

3) उपभोग पर सीमांत उपयोगिता ह्रासमान नियम लागू हो रहा है , साथ ही किसी वस्तु के उपभोग में वृद्धि होने पर उसकी सीमांत उपयोगिता में उत्तरोत्तर कमी होती जाती है।

4) उपभोक्ता की रुचियो आदतों तथा समाज में प्रचलित फैशन में कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है ।

* उपभोक्ता के अतिरेक की माप(measurement of Consumar's Surplus) :-

प्रोफेसर 'मार्शल' का विचार है कि किसी वस्तु के उपभोग से मिलने वाली उपयोगिता को मुद्रा द्वारा मापा जा सकता है अतः इसे भी मुद्रा के रूप में मापा जा सकता है इस प्रकार यह संकल्पना उपयोगिता के संख्यावाचक दृष्टिकोण पर आधारित है ।इसलिए उपयोगिता कि मापनीयता की परिधि में यदि हम किसी वस्तु की एक इकाई के उपभोग से प्राप्त होने वाली उपयोगिता में से उसकी कीमत को घटा दे तो उपभोक्ता का अतिरेक ज्ञात हो जाएगा। इसलिए मौद्रिक रूप में व्यक्त उपयोगिता वस्तु की उस कीमत को प्रदर्शित करती

है जिसे उपभोक्ता वस्तु के उपभोग से वंचित रहने की अपेक्षा देने को तैयार रहता है ।अतः संक्षेप में उपभोक्ता के अतिरेक मापन हेतु निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जा सकता है:-

उपभोक्ता का अतिरेक= कीमत जो उपभोक्ता देने को तैयार है - कीमत जो उपभोक्ता वास्तव में देता है।